
राज
कॉमिक्स
संख्या 1080
बांकेलाल और
कबाड़ा
RAJ COMICS
राज
कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA
-बेदी

हास्य सम्राट बांकेलाल का हास्य कॉमिक

बांकेलाल और कबाड़ा



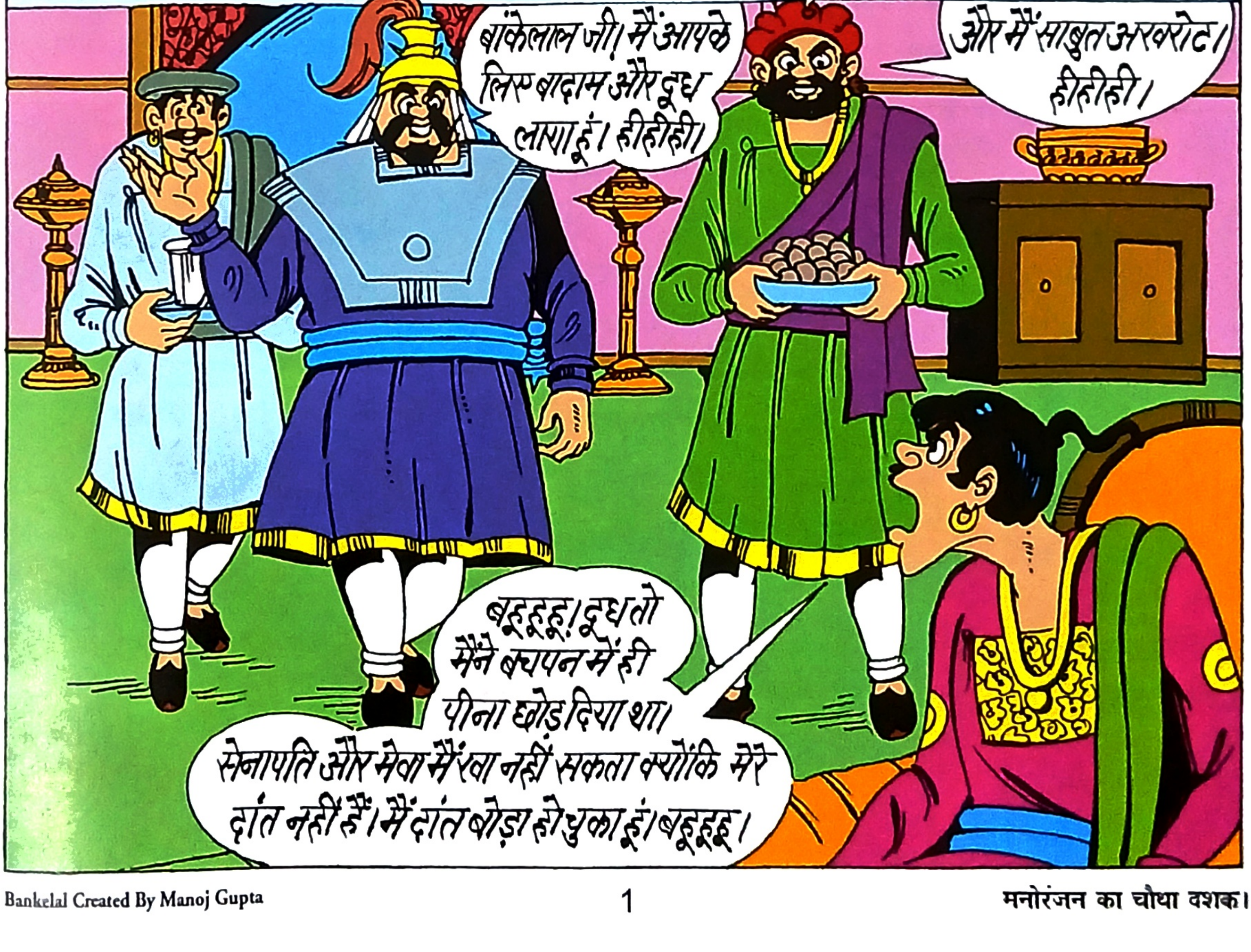
चित्रांकन: बेदी

सहयोग: अमित, अनूप, गौरव, श्रीकांत, राजकुमार

लेखक: तरुण कुमार वाही

संपादक: मनोज गुप्ता

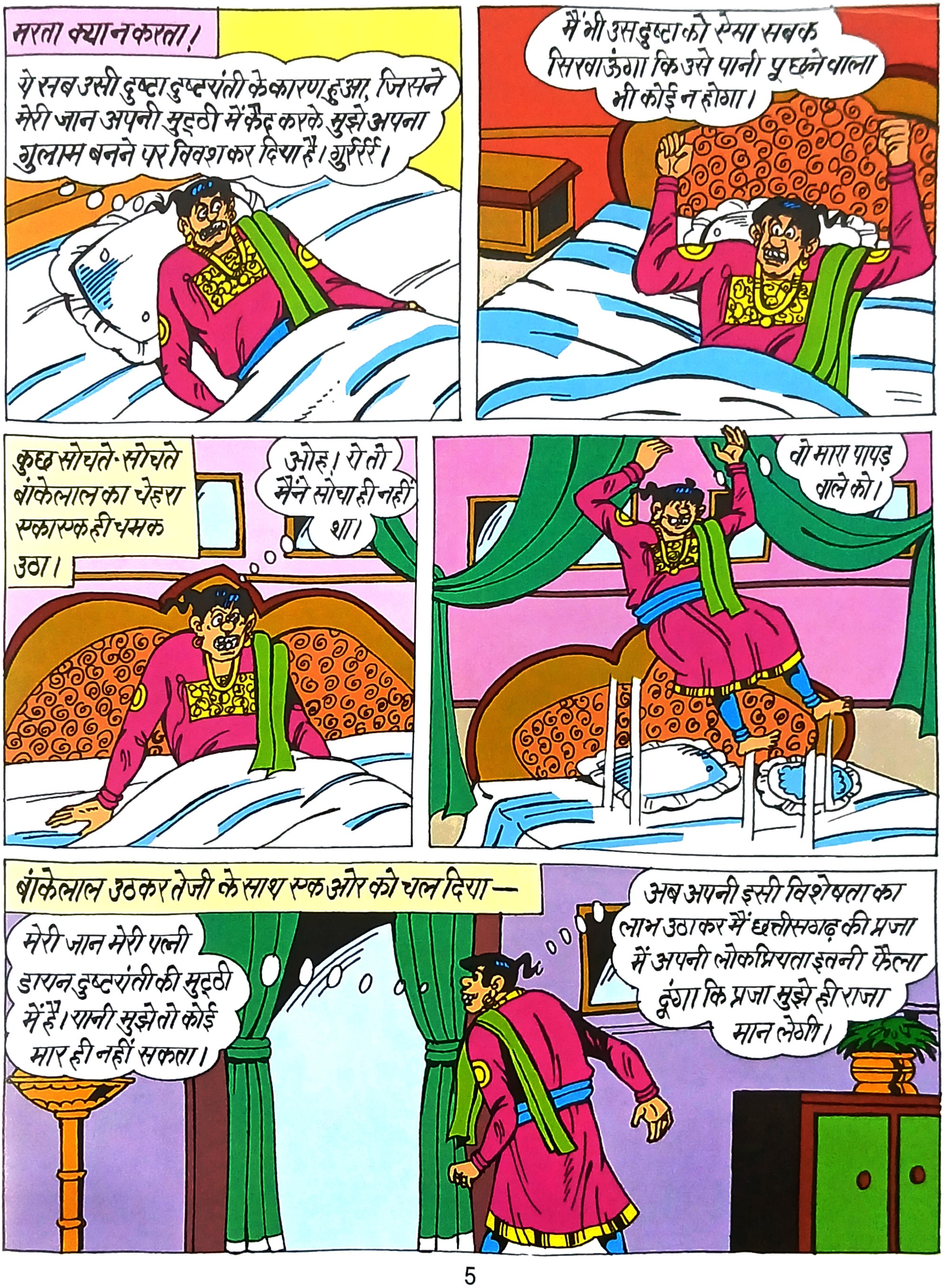
छत्तीसगढ़ की रानी रूपकंवर से विवाह के पश्चात राजा बनने के लोभ ने बांकेलाल को एक आज्ञाकारी पति तो बना दिया, किंतु राजा नहीं। अपनी डायन पत्नी से परेशान बांकेलाल बेचारा बहुत दुखी और विवश है। क्योंकि उसकी जान भी डायन दुष्टयंती की मुट्ठी में कैद है। डायन को छत्तीस दांतों के जिस जबड़े की तलाश थी, वो भी बांकेलाल का ही निकला जिसे प्राप्त करके अब उसे कुछ अतिरिक्त राक्षसी शक्तियां भी प्राप्त हो गई हैं। महामंत्री चमचा सिंह व सेनापति ठहाका सिंह रानी को तब तक मारने नहीं देंगे जब तक डायन रानी रूपकंवर का शरीर छोड़ नहीं देती। क्योंकि अगर बांकेलाल ने ऐसा किया तो डायन के साथ-साथ उनकी निर्दोष रानी रूपकंवर भी मारी जाएगी। बेचारा बांकेलाल अब क्या करेगा? क्योंकि अब तो वो हो चुका है दांत बोड़ा भी—




सेनापति! महामंत्री! अगर तुम मुझे डायन को मार लेने देते तो आज मेरे दांत सही-सलामत मुंह के अंदर होते। गुर्रर्र! बहूहूहू!
मैं मजबूर था बांकेलाल जी!
मैं भी।
अगर उस दुष्टा डायन को मारेंगे तो रानी रूपकंवर भी मरेंगी। मैं उनकी मृत्यु की कल्पना भी नहीं कर सकता।
मैं भी। बहूहूहू! हीहीही।
लेकिन घबराओ नहीं बांकेलाल! उधर देखो।
ये दंत विशेषज्ञ है। इसका नाम मंदबुद्धि है। मैंने इसे पहाड़पुरी से बुलाया है। ताकि ये आपको नए दांत लगा दे। हीहीही।
!!
हीहीही! मुंह खोलो। जबड़े का नाप लेना है। हीहीही।
नए यानी नकली दांत। बहूहूहू!


(अबे) बांकेलाल मैं हूं।
ओह! तो फिर तुम मुंह खोलो। हीहीही।
इस जबड़े में तो बैल के दांत ही लगेंगे।
चिंता मत करो। मैं ठोक दूंगा।
बांकेलाल! मुंह खुला ही रखना भले ही मक्खी घुस जाए। हीहीही।
अबे! ये क्या कर रहा है? दांत लगा रहा है या नाल।
बोलना नहीं। बोलना नहीं कील गलत जगह ठुक गई तो बाद में दांत ठीक से जुगाली नहीं करेंगे फिर मुझे दोष दोगे। बिल्कुल चुप रहो।
आह!
ठाक
बस हो गया। मेरा निशाना सटीक है। एक बार में ही काम हो जाता है। हीहीही।


जल्दी ही--
काम हो गया। बांकेलाल को पलंग पर लिटा दो।
हांहां। क्यों नहीं। ये लो पचास स्वर्ण मुद्राएं।
सेनापति जी। कृपया मेरा पारिश्रमिक मुझे दे दें। ताकि मैं यहां से चलता बनूं। हीहीही।
और हां। मेरे जाने से पहले बांकेलाल को आइने में अपनी शक्ल मत देखने देना। आखिर मैं भी बाल बच्चेदार हूं। अच्छा तो अप्पां चलते हैं। हीहीही।
बांकेलाल जी। अब आप अखरोट बादाम तो क्या गन्ना भी खा सकते हैं। हीहीही।
वाह! क्या दांत हैं? डायन दुष्टवंती के साथ अब आपकी जोड़ी खूब जमेगी। हीहीही।
प... पर मुझे भी तो दिखाओ कि नए दांत मुझ पर कैसे लग रहे हैं। हीहीही।
दंत विशेषज्ञ चला गया है। इन्हें आइना दिखा दो महामंत्री।
आइना देखते ही बांकेलाल चीख पड़ा--
बहूहूहू! ये... ये क्या? ये कैसे दांत हैं? उस कमबख्त दंत विशेषज्ञ को पकड़ो। मैं बांकेलाल से बैललाल हो गया हूं हूहू हू।
अब तो जो भी है जब तक आपको असली दांत नहीं मिल जाते इनसे ही गुजारा करना पड़ेगा बांकेलाल जी।


मरता क्या न करता!
ये सब उसी दुष्टा दुष्टवंती के कारण हुआ, जिसने मेरी जान अपनी मुट्ठी में कैद करके मुझे अपना गुलाम बनने पर विवश कर दिया है। गुर्रर्र।
मैं भी उस दुष्टा को ऐसा सबक सिखाऊंगा कि उसे पानी पूछने वाला भी कोई न होगा।
कुछ सोचते-सोचते बांकेलाल का चेहरा एकाएक ही चमक उठा।
ओह! ये तो मैंने सोचा ही नहीं था।
वो मारा पापड़ वाले को।
बांकेलाल उठकर तेजी के साथ एक ओर को चल दिया—
मेरी जान मेरी पत्नी डायन दुष्टवंती की मुट्ठी में है। यानी मुझे तो कोई मार ही नहीं सकता।
अब अपनी इसी विशेषता का लाभ उठा कर मैं छत्तीसगढ़ की प्रजा में अपनी लोकप्रियता इतनी फैला दूंगा कि प्रजा मुझे ही राजा मान लेगी।


बांकेलाल राजदरबार में पहुंचा—
अरे स्वामी! आइये अपना चरणासन्न ग्रहण कीजिये। हीहीही।
!!
गर्रर्रर्र
जग-हंसाई से बचने के लिए मुझे फिलहाल अपना मुंह बंद ही रखना पड़ेगा। बोलना भी पड़ा तो ध्यान रखना होगा कि मुंह ज्यादा न खुले, वरना दांतों की पोल खुल जायेगी बुहुहु।
तभी--
महारानी! हमारा क्या होगा? हमें डाकू संग्राम सिंह से कौन बचायेगा?
इसका उपाय तो बहुत सरल है।
डाकुओं को क्या चाहिए?
धन!
अगर धन तुम्हारे घरों में रहेगा तो डाकू उसे लूटने तुम्हारे घरों पर धावा जरूर बोलेंगे। तब धन भी जायेगा और जान भी। हीहीही।
तो फिर सीधा सा उपाय है। सब लोग अपना सारा धन राजकोष में जमा करा दें, ताकि डाकुओं से कम से कम तुम सब लोगों की जान तो बच सके। हीहीही।


और अगर मेरे इस फैसले से किसी को कोई ऐतराज है तो वो दहाड़ू के पास आ जाए। हीहीही।
दुष्टा! तुझे और तेरे दहाड़ू को सबक मैं सिखाऊंगा गुर्र्र्र्र।
गुर्र्र्र्र। किसकी हिम्मत है। हीहीही।
रानी के फैसले से प्रजा में असंतोष व भय की लहर फैल गई—
सारा धन राजकोष में जमा करा दिया तो हमारी आवश्यकताएं कैसे पूर्ण होंगी।
यहां अब रामराज्य नहीं रानी की मनमानी चलेगी बहूहूहू।
और तभी—
ओह! ये तो डाकू संग्राम सिंह की चुटिया है।
हीहीही
हीहीही। जल्दी ही अपने धन की पोटलियां मेरी चुटिया से बांध दो वरना मेरे आदमी इसे तुम्हारी गर्दन पर कस देंगे। हीहीही।

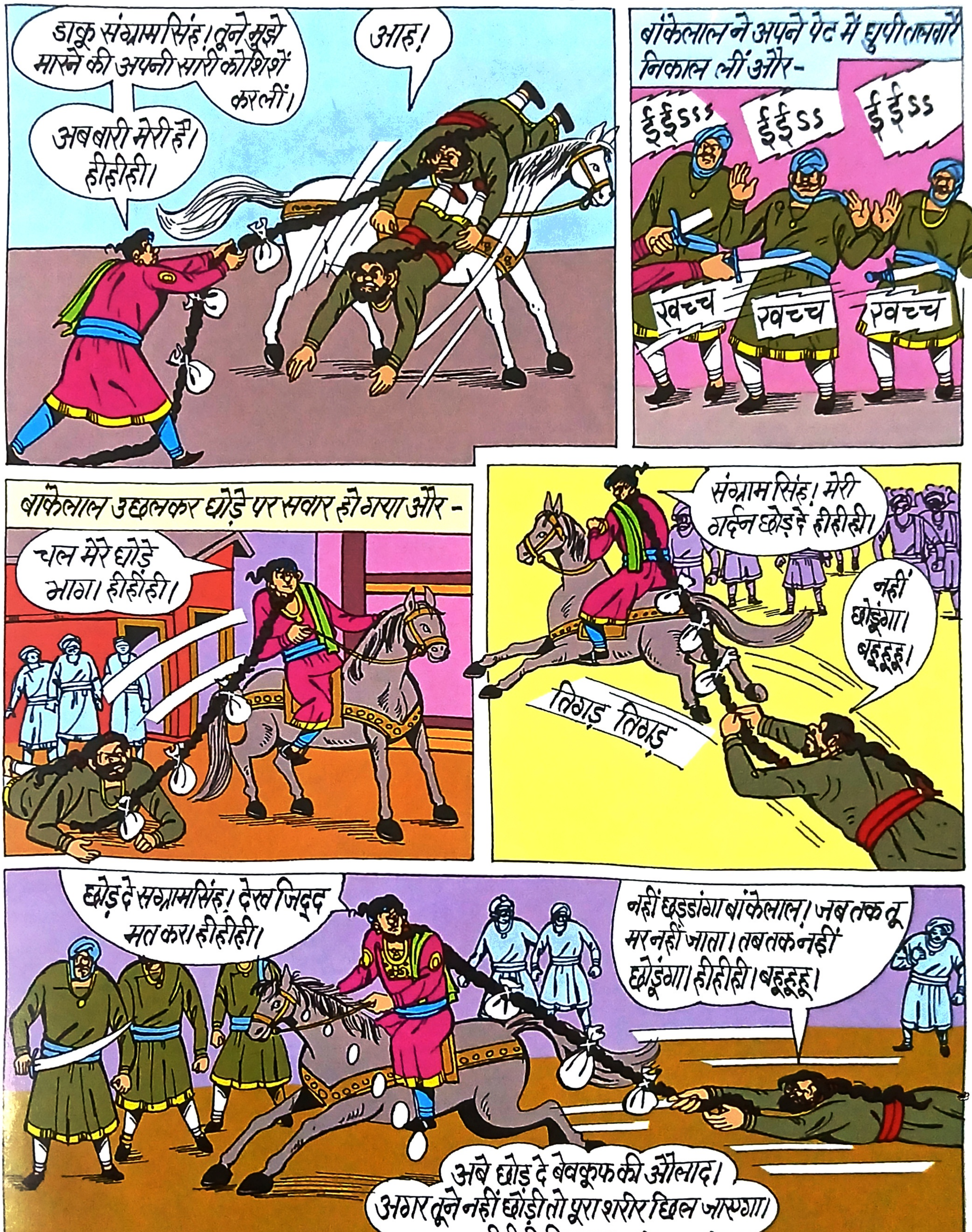

बेचारे लोग क्या करते —
इन डाकुओं से हमारी रक्षा करने कोई भी नहीं आएगा। जान बचानी है तो धन डाकुओं को सौंप दो।
हीहीही! शाबाश! जल्दी करो।
बूहूहू!
देखा टपका सिंह! आज भी हम कामयाब हो गए। ऋषि असत्याचार्य ने झूठ नहीं कहा था कि हम जब भी अपने बालों में लम्बी चुटिया बांध कर डाका डालेंगे तो सफलता हमारे कदम चूमेगी।
नाम से ही जाहिर है सरदार की ऋषि असत्याचार्य झूठ बोल ही नहीं सकते। हीहीही।
लेकिन —
अरे! ये तलवार फेंक कर मेरी चुटिया किसने काट दी? मैं उसे गंजा कर दूंगा।


तो फिर बढ़ आगे शैतान डाकू संग्रामसिंह! क्योंकि अभी तो मैंने सिर्फ तेरी चुटिया काटी है। गर्दन काटना तो बाकी है। हीहीही।
हिननननन! लगाम धीरे खींच बांकेलाल! मेरे मुंह में दर्द हो रहा है। हीहीही।
बांकेलाल जी!
महाराज बांकेलाल जी?
ये तो स्वयं महाराज बांकेलाल जी हैं। हमारे महल जमाई। हीहीही।
जबकि संग्राम सिंह क्रोध से कांपता चीख पड़ा—
बांकेलाल! चुटिया तो तेरी भी है।
तूने मेरी चुटिया काटी है... मैं भी तेरी चुटिया काटूंगा और फिर गर्दन। पकड़ लो इसे। हीहीही।
हां, हां, आ जाओ। डरता कौन है?
डाकू एक साथ बांकेलाल पर झपट पड़े-
तुम भी क्या याद करोगे कि किसी बांकेलाल से पाला पड़ा था। हीहीही।


डाकू संग्रामसिंह ने बांकेलाल को अपने साथियों से उलझा देख पीछे से आकर उसकी गर्दन अपनी चुटिया में जकड़ ली-
हीहीही। मैं हमेशा पीठ की तरफ से वार करता हूं।
!!
...क्योंकि इससे एक तो दुश्मन की तलवार से अपनी छाती बची रहती है। हीहीही...
...दूसरे शत्रु को ढेर करने में भी देर नहीं लगती। हीहीही।
दबा। दबा। और दबा। मैं चीज बड़ी हूं मस्त-मस्त। हीहीही।
क्यों साथियो, ये मर गया या नहीं?
हीहीही।
अभी नहीं मरा। सरदार! ये तो मुस्करा रहा है।
क्या? मुस्करा रहा है?
अब देखो। मैंने इसकी गर्दन थोड़ी और जोरों की जकड़ दी है। हीहीही।
हीहीही।
मर गया न?
नहीं सरदार! अब तो ये हंस रहा है।

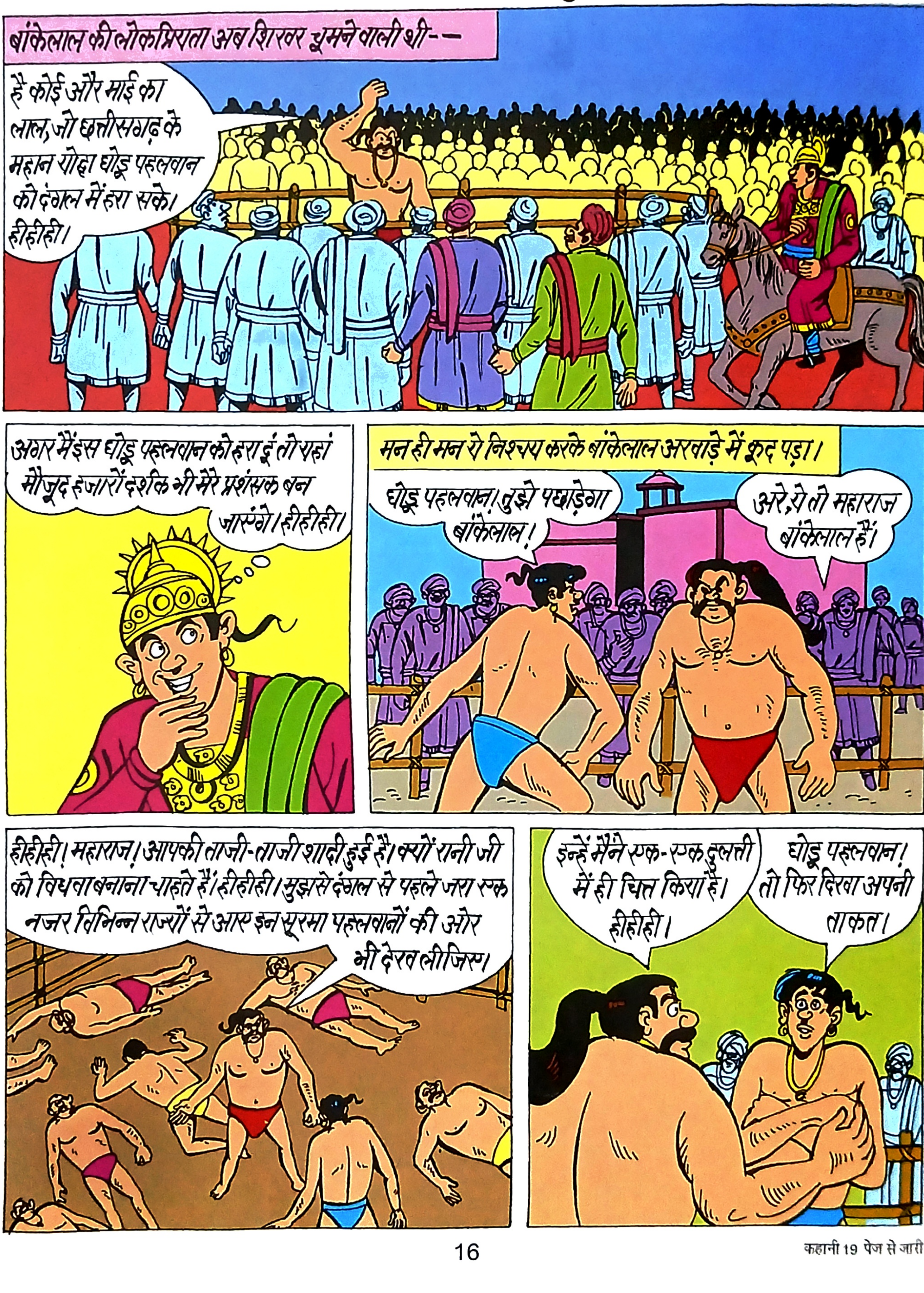

क्या?
अभी भी हंस रहा है?
हीहीही!
अब देखो! एक बार मैंने इतनी ताकत लगाकर एक सांड का गला दबाया था तो उसकी आंखें भी बाहर आ गई थीं। जल्दी बताओ इसका क्या बाहर आ रहा है।
कुछ नहीं सरदार! ये तो अभी भी हंस रहा है।
हीहीही।
क्या?
तो कमबख्तो! खड़े-खड़े इसका मुंह क्या देख रहे हो। अपनी तलवारें उसके पेट में घुसेड़ दो।
हीहीही!
घुप्प
घुप्प
घुप्प
हीहीही! अब इसकी हंसी बंद हो जाएगी।


सरदार! ये तो अभी भी हंस रहा है।
हीहीही!
अब इसकी हंसी जरूर बंद हो जाएगी जब मैं इसकी गर्दन में फंदा कसके...
...इसे घोड़े से खींचूंगा। भाग घोड़े! हीहीही!
हीहीही! खींच! खींच! अपनी हरतमन्ना पूरी कर ले डाकू संग्राम सिंह!
जल्दी देखो। अब तो ये जरूर मर गया होगा। हीहीही।
सरदार! ये तो अभी भी हंस रहा है।
हीहीही। बस बहुत हो गया तमाशा।


डाकू संग्रामसिंह! तूने मुझे मारने की अपनी सारी कोशिशें करलीं।
आह!
अब बारी मेरी है। हीहीही।
बांकेलाल ने अपने पेट में छुपी तलवारें निकाल लीं और -
ईईऽऽऽ
ईईऽऽ
ईईऽऽ
खच्च
खच्च
खच्च
बांकेलाल उछलकर घोड़े पर सवार हो गया और -
चल मेरे घोड़े भाग। हीहीही।
संग्राम सिंह! मेरी गर्दन छोड़ दे हीहीही।
नहीं छोड़ूंगा। बहुहूह।
तिगड़ तिगड़
छोड़ दे संग्रामसिंह! देख जिद्द मत कर। हीहीही।
नहीं छोड़ूंगा बांकेलाल! जब तक तू मर नहीं जाता। तब तक नहीं छोड़ूंगा। हीहीही। बहुहूहू।
अबे छोड़ दे बेवकूफ की औलाद। अगर तूने नहीं छोड़ी तो पूरा शरीर छिल जाएगा। हीहीही हिनन्नन


घोड़े का सोचना ठीक निकला—
हीहीही! अब इसके मुंह से कोई आवाज नहीं निकल रही।
रगड़ा गया न पूरा। भगवान इसकी आत्मा को शांति दे। हिनन।
बांकेलाल ने संग्राम सिंह को हिला डुला कर देखा और बोला—
साथियो, ये मर चुका है।
हिनन हिनन (भगवान ने बेचारे संग्रामसिंह को डाकू तो बना दिया पर अक्ल मेरे से भी कम दी। हीहीही।)
डाकू संग्राम सिंह का खतरा हमेशा-हमेशा के लिए टल चुका है।
अपनी-अपनी धन की पोटलियां इसकी चुटिया से वापस खोल लो। हीहीही।
दूसरे ही पल—
बोलो महाराज बांकेलाल की...
अरेरेरे! ये क्या करते हो? मैं गिर गया तो मर जाऊंगा। हीहीही
जय!


बांकेलाल वहां से विदा हुआ-
योजना सफल होती लग रही है। क्योंकि लोगों पर धाक जमाने का मेरा प्रयास सफल हुआ है। हीहीही।
महाराज बांकेलाल जी!
जिन्दाबाद!
तभी-
ओह! सब लोगों ने अपने धन की पोटलियां तैयार कर ली हैं।
लाओ। इससे पहले कि डाकू संग्रामसिंह आए और तुम्हें मार कर यह धन तुमसे छीन ले जाए.. ये पोटलियां मेरे सैनिकों को सौंप दो? हीहीही?
महामंत्री जी! आप हमारी धन की पोटलियों को नहीं, डाकू संग्रामसिंह और उसके साथियों को यहां से ले जाओ। हीहीही।
क्या?
इन्हें किसने मारा?
हमारे महाराज बांकेलाल जी ने। हीहीही।
ओह! बांकेलाल!



बांकेलाल की लोकप्रियता अब शिखर चूमने वाली थी--
है कोई और माई का लाल, जो छत्तीसगढ़ के महान योद्धा घोड़ू पहलवान को दंगल में हरा सके। हीहीही।
अगर मैं इस घोड़ू पहलवान को हरा दूं तो यहां मौजूद हजारों दर्शक भी मेरे प्रशंसक बन जाएंगे। हीहीही।
मन ही मन ये निश्चय करके बांकेलाल अखाड़े में कूद पड़ा।
घोड़ू पहलवान! तुझे पछाड़ेगा बांकेलाल!
अरे, ये तो महाराज बांकेलाल हैं।
हीहीही! महाराज! आपकी ताजी-ताजी शादी हुई है। क्यों रानी जी को विधवा बनाना चाहते हैं। हीहीही। मुझसे दंगल से पहले जरा एक नजर विभिन्न राज्यों से आए इन सूरमा पहलवानों की ओर भी देख लीजिए।
इन्हें मैंने एक-एक दुलत्ती में ही चित किया है। हीहीही।
घोड़ू पहलवान! तो फिर दिखा अपनी ताकत।

कहानी 19 पेज से जारी

- भारतीय संस्कृति की ज्ञान गंगा में नहाएं
- पौराणिक सम्पदा को अपने घर में सजाएं
- नई पीढ़ी के स्वर्णिम निर्माण के लिए पढ़ें और पढ़ाएं

राज चित्रकथा

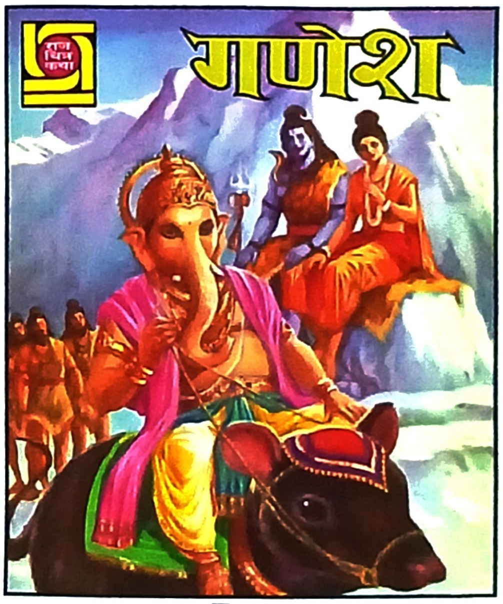
की गौरवशाली सोलह चित्रकथाएं

- राम
- अर्जुन का बनवास
- लक्ष्मण
- भीम
- पार्वती
- सूर्यपुत्र कर्ण
- द्वारिकाधीश कृष्ण
- नीलकंठ शिव
- वासुदेव कृष्ण
- सती
- बलराम
- पवनपुत्र हनुमान
- श्रीकृष्ण सत्यभामा
- गंगापुत्र भीष्म
- शत्रुघ्न
- शिवपुत्र कार्तिकेय

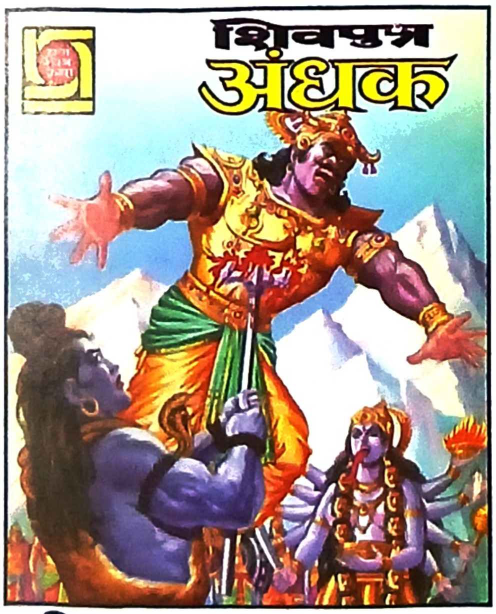
इनकी अपार सफलता के बाद अब प्रस्तुत हैं चार नई चित्रकथाएं

प्रत्येक का मूल्य 15/-

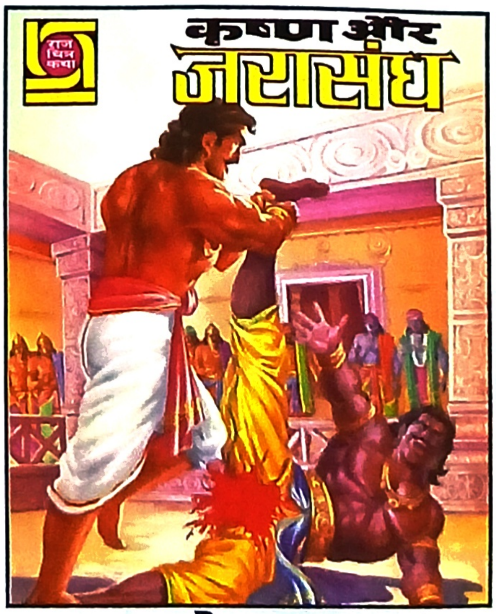
सभी चित्रकथाएं आपके शहर के समस्त बुक स्टालों पर उपलब्ध हैं। न मिलने पर कोई भी चार चित्रकथाएं मंगाने के लिए 60/- का मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें। चारों चित्रकथाएं आपको रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेज दी जाएंगी। मनीआर्डर के निचले हिस्से पर कॉमिकों के नाम लिखकर भेजें।



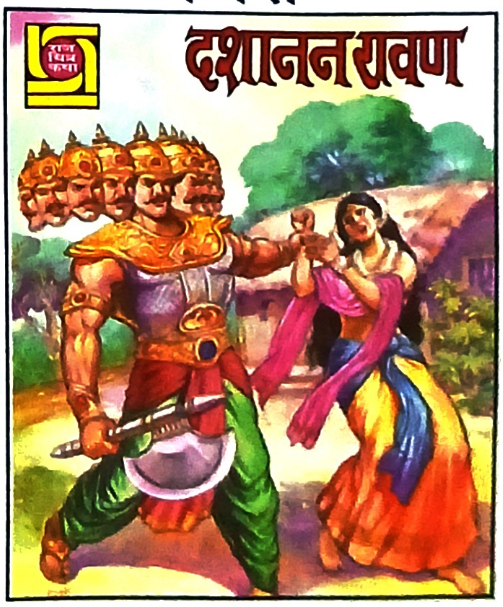
गणेश



शिवपुत्र अंधक



कृष्ण और जरासंध



दशानन रावण


इस वक्त तुम मेरे लिए महाराज नहीं... सिर्फ एक प्रतिद्वंद्वी हो इसलिए मैं तुम्हें तुम्हारा नाम लेकर पुकारूंगा।
धाड़
महाराज को घोंदू पहलवान से नहीं उलझना चाहिए था।
इसका गुरु एक घोड़ा है। जिससे इसने दुलतियां मारना सीखा है।
ये दुलतियां मार-मारकर महाराज की लंगोटी ढीली कर देगा। हीहीही।
अरे! ये तो मेरी दुलत्ती खाकर भी खड़ा हो रहा है।
हीहीही
धाड़
ये तो दूसरी भी पचा गया।
बहुहुहू चोट तो मुझे लगती है लेकिन अपनी बहादुरी दिखाने के लिए पीड़ा का प्रदर्शन नहीं कर सकता। बहुहुहू। हीहीही।
खैर तीसरी नहीं पचा पाएगा। हिनिनन।
धाड
ओफ्फ!


इस पर दुलत्तियों का असर नहीं हो रहा कोई बात नहीं।
मैं इसे धोबी पाट दे-देकर धो डालूंगा हीहीही।
धाड़
धाड़
धाड़
आयं! ये तो अभी भी होश में है। बहहह।
हीहीही!
कोई बात नहीं।
इस बार इसकी हड्डियों का चूरा बन जाएगा। हीहीही।
मैं इस पहलवान को अपनी ताकत दिखाने का पूरा मौका दे रहा हूं। हीहीही।
वाह!
हीहीही!
मैं मुगदर मार कर इसका सिर तोड़ दूंगा।

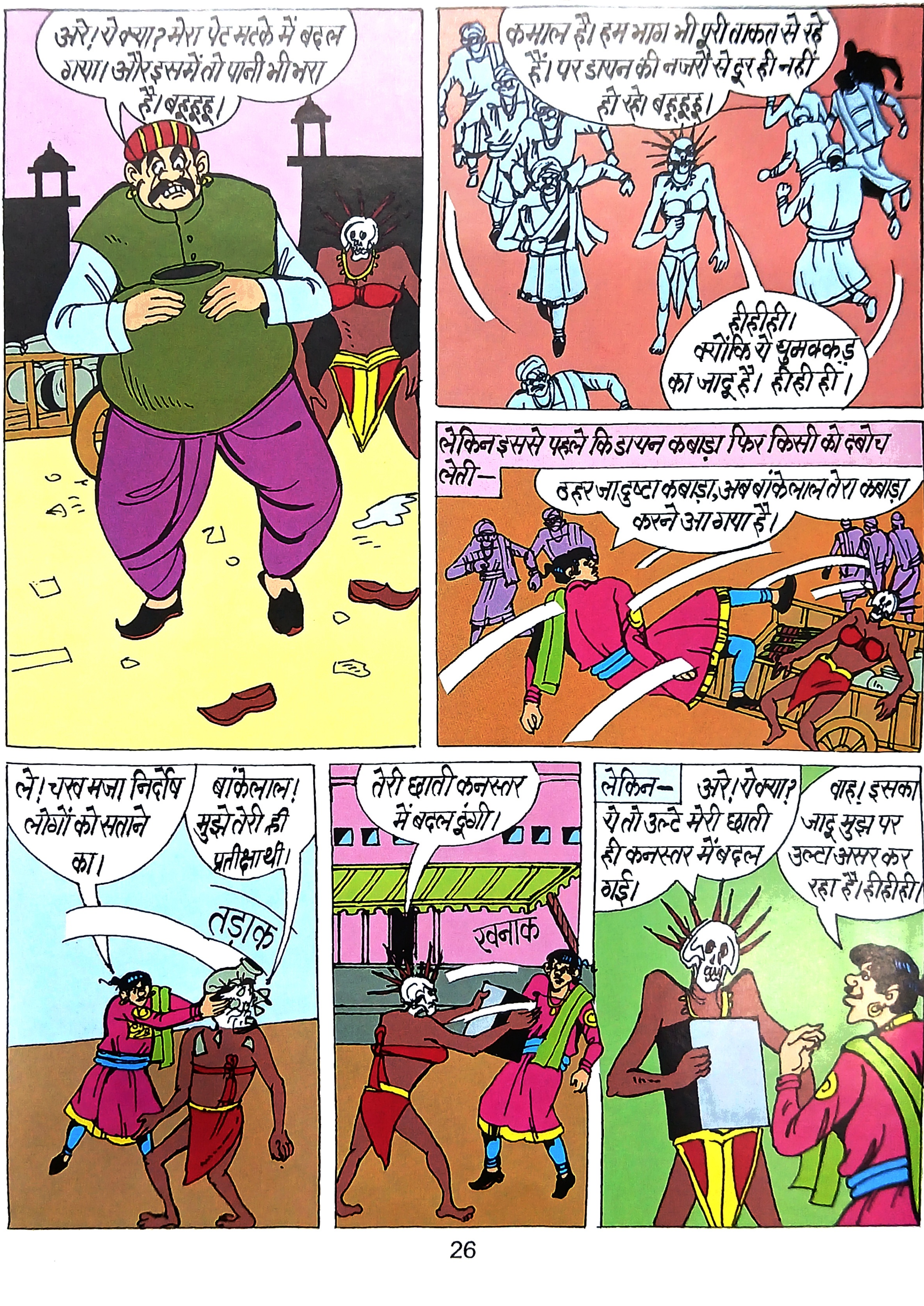

भड़ाक
महाराज गए।
महारानी विधवा हो गई। बहहहह।
ये तो अभी भी खड़ा है। बहूहूहू।
इसकी टांगें तोड़ देता हूं।
हीहीही! बहूहूहू।
ठाक
घोड़ू पहलवान! ये किसी बगुले की नहीं, बांकेलाल की टांगें हैं। हीहीही।
तूने बहुत सारे वार कर लिए। अब तू मेरे शक्तिशाली मुक्के का वार पचा पाएगा या नहीं ये सबको दिखाने का वक्त आ गया है।
नहीं!
मुझे तेरा मुक्का नहीं खाना। बहूहूहू! भाग बेटा घोड़ू पहलवान वरना ये तेरी नाक में नकेल डाल देगा। बहूहूहू।
भागता कहां है घोड़ू पहलवान! रुक जा मैं धीरे मारूंगा।
लानत है इस पर कम्बख्त ने घोड़ों का नाम बदनाम कर दिया। गुर्रर्र!
हिननन।


विजयी बांकेलाल की जय जयकार से आकाश गूंज उठा—
महाराज बांकेलाल...
जिंदाबाद
महाराज बांकेलाल की...
जय
जय
हमारा राजा कैसा हो?
बांकेलाल जैसा हो।
वाह! योजना निश्चित रूप से सफल हो रही है। मेरी धाक इन पर जम रही है।
अरे! ये तो बांकेलाल है। लोग इसकी जय-जयकार क्यों कर रहे हैं?
आखिर महामंत्री ने कारण पता लगाया—


और महामंत्री चमचा सिंह से वह समाचार पाकर डायन रानी चौंक पड़ी--
ओह! स्वामी की जय-जयकार होने लगेगी तो फिर मुझे कौन पूछेगा।
जय-जयकार स्वामी की नहीं, बल्कि मेरी और मेरी ताकत की होनी चाहिए।
मेरे लिए क्या हुक्म है महारानी जी? आप कहें तो अब भी आपके चरण धो-धोकर पी सकता हूं। आप बांकेलाल जी को तलाक देकर तो देखिए। हीहीही।
अब तो मेरा स्वामी से तलाक तभी होगा महामंत्री, जब उनकी जिन्दगी उन्हें तलाक दे देगी। हीहीही। तब तक तुम्हें प्रतीक्षा करनी होगी।
लेकिन इसका ये अर्थ भी नहीं कि मैं स्वामी व प्रजा को अपने सिर पर चढ़ने दूंगी। हीहीही।
अब तुम जाओ।
अप्पा इंतजार करांगे। बहूहूहू।
हीहीही अब मैं वो पहले वाली दुष्टपंती नहीं रही... जिसकी डायन शक्तियां छिन चुकी थीं।
जब से मुझे छत्तीस दांतों का जबड़ा मिल गया है।... मुझे मेरी शक्तियां भी वापस मिल गई हैं।


डायन रानी दुष्टवंती एक गुप्त स्थान पर पहुंची और—
हीहीही! छत्तीस का आंकड़ा छत्तीस का जबाड़ा प्रजा चढ़ गई सिर। पैदा कर कबाड़ा! हीहीही!
हीहीही! अब देखूंगी कि स्वामी इस बला कबाड़ा से प्रजा को कैसे बचाते हैं? ये बला प्रजा के साथ-साथ स्वामी की उस इज्जत का भी कबाड़ा कर देगी जो स्वामी ने प्रजा में बनाई है। हीहीही!
छत्तीसगढ़ पर और मुसीबत मंडराने लगी थी।
झाड़ू लो। डण्डा लो। हाथ से हिलाने वाला पंखा लो। मटका लो। मटकी लो। सुराही लो। कनस्तर लो। टिन-टप्पड़ लो। और भी बहुत कुछ लेकर आई है...
...ये बला कबाड़ा हीहीही!...
...जो जीते-जागते इंसानों का कबाड़ा कर देती है।
बचाओ!
मालूम है कैसे अभी दिखाती हूं।
ये गई तेरी पुरानी बाजुएं। और...


...आ जुड़ी नई बाजुएं। हीहीही।
जिन्हें ये बाजुएं कह रही है ये... ये तो झाड़ुएं हैं। बहुहुहु। मेरी नई बाजुएं सड़क की तरफ बढ़ रही हैं। शायद सफाई करने के लिए। बहुहुहु।
कबाड़ा को देखकर भगदड़ मच गई थी।
भागो।
भागो! ये तो कोई डायन है।
हीहीही। ये किया मैंने घुम्मकड़ का जादू। जिसके प्रभाव से ये लोग भागते तो रहेंगे पर मेरे ही आसपास से होकर। हीहीही।
और मैं इनके शरीर से छुआ कर इन चीजों से करती रहूंगी...
...इनका कबाड़ा। हीहीही।
मेरी गर्दन मटकी में बदल गई।
इस डायन ने मेरी टांगों को अपने जादू के प्रभाव से डण्डे बना दिया है। बहुहुहु।
हीहीही।
कम्बख्त ने मेरा कान पंखे में बदल दिया। अब रोज बीवी को झलना पड़ेगा। बहुहुहु।
हीहीही।

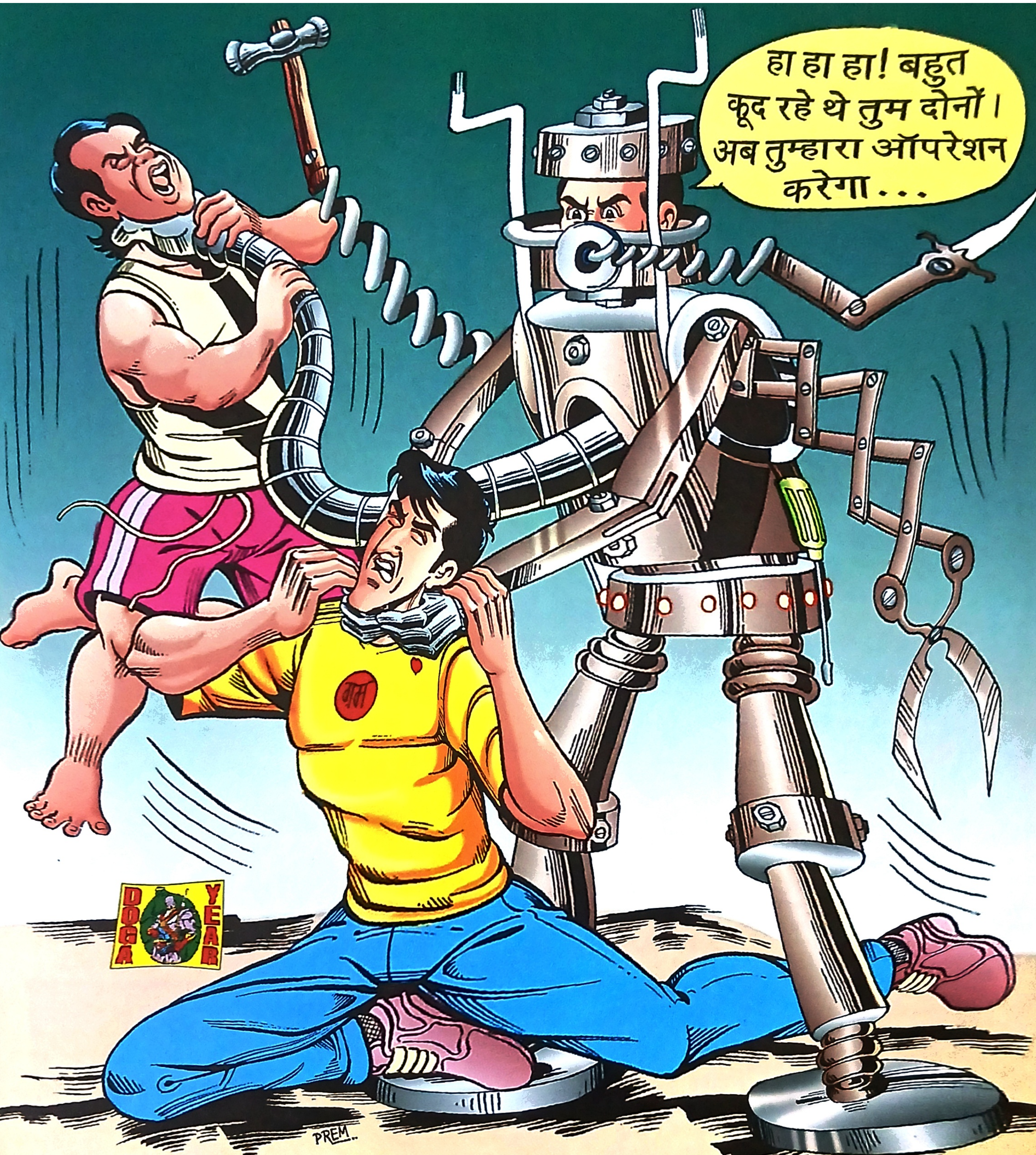

अरे! ये क्या? मेरा पेट मटके में बदल गया। और इसमें तो पानी भी भरा है। बहूहूहू।
कमाल है। हम भाग भी पूरी ताकत से रहे हैं। पर डायन की नजरों से दूर ही नहीं हो रहे बहूहूहू।
हीहीही। क्योंकि ये घुमक्कड़ का जादू है। हीही ही।
लेकिन इससे पहले कि डायन कबाड़ा फिर किसी को दबोच लेती—
ठहर जा दुष्टा कबाड़ा, अब बांकेलाल तेरा कबाड़ा करने आ गया है।
ले! चख मजा निर्दोष लोगों को सताने का।
बांकेलाल! मुझे तेरी ही प्रतीक्षा थी।
तड़ाक
तेरी छाती कनस्तर में बदल दूंगी।
खनाक
लेकिन—
अरे! ये क्या? ये तो उल्टे मेरी छाती ही कनस्तर में बदल गई।
वाह! इसका जादू मुझ पर उल्टा असर कर रहा है। हीहीही।


झाडुओं का प्रहार जरूर सफल होगा।
तड़ाक
आयं! इस बार भी मेरी ही बाजुएं झाडुओं में बदल गईं।
ये मुझ पर जो भी प्रहार कर रही है उसका उल्टा असर इसी पर हो रहा है।
बांकेलाल! अपनी स्वामिनी के आदेश पर प्रजा से तेरा मोह मैं भंग करके ही जाऊंगी।
स्वामिनी!
कौन है इसकी स्वामिनी? डायन की स्वामिनी डायन ही हो सकती है। तो इसका मतलब इसे दुष्टयंती ने भेजा है।
और... अरे! डायन कहां गई। हीहीही।
समझ गया। कबाड़ा ने सारा समान मुझ पर फेंक मारा था। कबाड़ का ये ढेर ही तो डायन कबाड़ा है। हीहीही।
कबाड़ा के मरते ही—
मैं ठीक हो गया।
मैं भी।
ओए मैं भी।
मैं भी।


ये सारा कमाल तो हमारे नए महाराज बांकेलाल जी का है। दुष्टा कबाड़ा का अंत करके महाराज बांकेलाल जी ने हमें बहुत बड़े संकट से बचा लिया।
बोलो महाराज बांकेलाल की...
की जय
की...जय
जय...
हीहीही!
महामंत्री ने ही यह सूचना भी रानी तक पहुंचाई--
क्या? कबाड़ा स्वामी के हाथों मारी गई?
मुझे तो आपकी चिंता हो रही है। मैं तो कहता हूं फौरन तलाक ले लो।
चुप रहो महामंत्री। गुर्रर्रर्र। अब मैं समझी कि ऐसा क्यों हो रहा है? क्योंकि स्वामी की जान मेरी मुट्ठी में है। इस बात का लाभ उठाकर स्वामी प्रजा पर अपनी धाक जमा रहे हैं।
ओ रे बल्ले बल्ले। हीहीही।
और ऐसा होता भी जा रहा है।
अगर मैंने शीघ्र ही स्वामी की जान को अपनी मुट्ठी की कैद से स्वतंत्र न किया तो भले ही राजगद्दी पर मैं ही आसीन हूं पर लोग राजा स्वामी को ही मानने लगेंगे। हीहीही।
पर मैं भी बड़ी चंट हूं। डायन जो हूं। हीहीही। मैं इसी वक्त स्वामी की जान अपनी कैद से स्वतंत्र करती हूं। हीहीही।
अब आएगा मजा। हीहीही।


जबकि इधर—
दो पैरों पर चलता शेर आ गया।
अरे भागो।
गर्रर्र! बाऊजी नमस्ते! मैं शिकार करने से पहले नमस्ते करता हूं।
हीहीही।
दूर हट कम्बख्त।
धाड़
तुमने शेर को लात मारी। बाऊजी, नमस्ते गुर्रर्र।
हां हां, आजा। तू क्या बिगाड़ लेगा?
और तभी--
बांकेलाल जी! बचो।
सेनापति! बेकार ही तुमने इसे रोक दिया। इसे मेरे हाथों मरने दिया होता।
आह!
वो तो ठीक है बांकेलाल जी। पर जैसे ही मुझे महामंत्री ने बताया कि रानी जी ने आपकी जान अपनी मुट्ठी से स्वतंत्र कर दी है तो मैं दौड़ा आया।
अगर मैं इसे न रोकता तो ये आपको फाड़कर खा जाता। हीहीही।
क्या?
सेनापति की बात के सदमे में बांकेलाल फौरन ही बेहोश होकर गिर पड़ा—
ओहो। दुष्टा ने नई चाल चल दी। बहुहुहू।
कब छूटेगा डायन से पीछा। बहुहुहू।
बांकेलाल जी को महल ले चलो। हीहीही।
KSN PRO

समाप्त



डॉक्टर बंदर

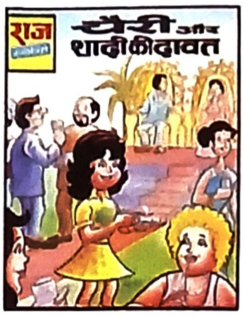
राज कॉमिक्स में ट्रेजडी किंग गमराज का हास्य कॉमिक

राज कॉमिक्स की
कार्टून सीरीज के आकर्षक कॉमिक

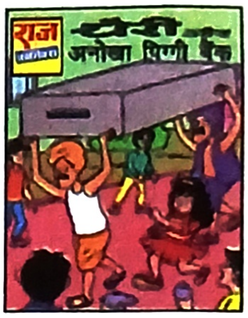






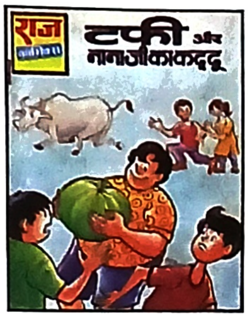








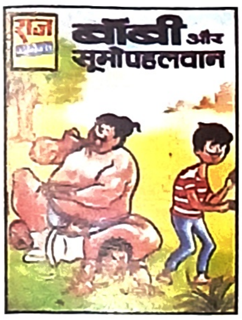




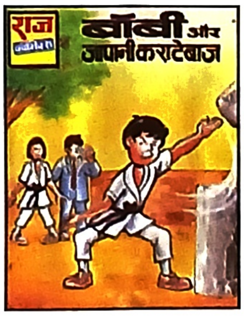




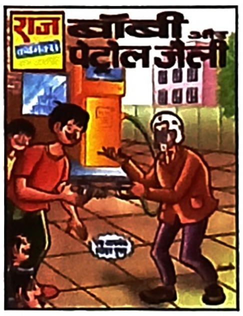






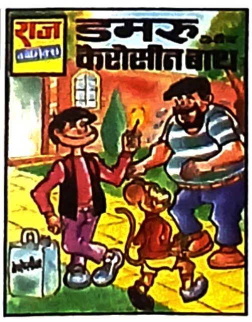


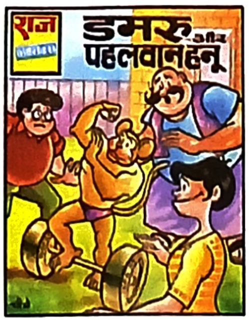


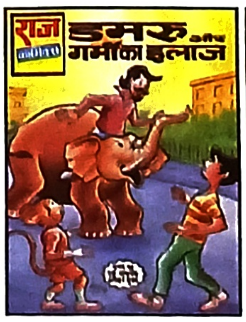


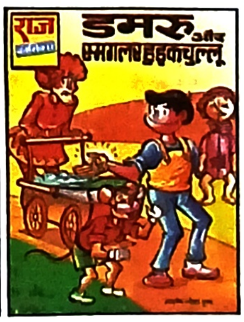


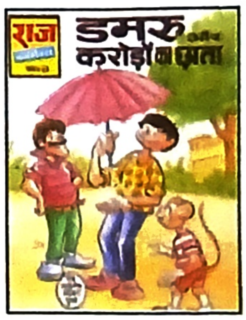












प्रकाशकः राजा पॉकेट बुक्स, 330/1
बुराड़ी, दिल्ली-84. फोन-27611410.



DOGA YEAR

सुपर स्टार

अगस्त 2000 में उपलब्ध

फाइटर टोड्स बन गए हैं 'मोस्ट वाण्टेड' सुपर स्टार्स, लेकिन किसकी नजरों में? जानने के लिए पढ़िए फाइटर टोड्स का एक्शन और शूटिंग से मालामाल ये विशेषांक

RAJ COMICS
राज कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA

बांकेलाल



हास्य सम्राट बांकेलाल!

उसका डेढ़ पसली बदन, सिर पर लगा बोदी वाला एंटीना, और सामने के निकले दो दांत ही उसके षड्यंत्रकारी दिमाग में चल रही खुराफातों को उजागर कर देते हैं।

सदियों से ही उसका बस एक ही सपना है, किसी तरह विशालगढ़ के महाराज विक्रम सिंह को रास्ते से हटाकर खुद राजा बनना। मगर, एक श्राप के कारण, वो जिसका भी बुरा करने निकलता है, उसका भला ही हो जाता है। नित नई योजना बनाता बांकेलाल न चाह कर भी हर मुश्किल हल करके बन जाता है सबका प्यारा बांकेलाल।

प्रिय दोस्तों,

1986 में राज कॉमिक्स की स्थापना के बाद से आज तक आप सभी का जो अटूट प्रेम मिला, साथ मिला, उसके लिए हम हृदय से आपके सदा आभारी हैं।

आपका,

मनोज गुप्ता



ISBN 978-93-324-0486-1
COMICS
GENL-1080
9 789332 404861
₹100.00
www.rajcomics.net